International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(4): 171-173

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(4): 171-173
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-05-2021
Accepted: 21-06-2021

प्रियंका
शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
प्रियंका
शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

पाणिनीय गणपाठ का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

प्रियंका

साराश
आचार्य पाणिनि द्वारा गणपाठ में सार्थक शब्द समूहों को उपस्थित किया गया है। इन सार्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा भी पाणिनीय व्याकरण द्वारा विहित है। पाणिनीय गणपाठ पदविज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण उपस्थित करता है। लोकप्रयुक्त प्राकृत पाली अपभ्रंष भाषाएँ संस्कृत भाषा की समसामयिक भाषाएँ रही हैं। पाणिनीय व्याकरण का उद्देष्य तत्कालीन लोकप्रयुक्त अनेक अपभ्रंष शब्दों से संस्कृत शब्दों की शुद्धता, पृथकता बनाए रखना तथा संस्कृत शब्दों के अर्थो, उच्चारणों, प्रयोगों, सिद्धियों को ज्ञापित करना रहा है। महाभाष्य में एक ही शब्द के अनेक अपभ्रंष रूपों की चर्चा मिलती है। संस्कृत शब्दों से पृथक प्राकृत पाली अपभ्रंष भाषाओं के शब्दों को महाभाष्य में सम्मिलित रूप से अपभ्रंष शब्द द्वारा अभिहित कर दिया गया है। पाणिनीय गणपाठ के अनेक शब्द प्राकृतादि भाषाओं में सदृष रूप वाले, स्वरागम वाले अथवा व्यंजन परिवर्तन वाले प्राप्त किये जा सकते हैं। प्राकृतादि भाषाओं के इन सदृष रूप वाले तथा परिवर्तित रूप वाले पाणिनीय गणपाठ के शब्दों में अर्थ की भिन्नता तथा अभिन्नता दोनों ही देखी जाती है प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा पाणिनीय गणपाठ गत शब्दों के अर्थ परिवर्तन, अर्थ विकास, अर्थप्रयोगादि का विश्लेषण वैदिक, प्राकृत, संस्कृत, पाली, अपभ्रंष भाषाओं के कोषग्रन्थों तथा साहित्यिक ग्रन्थों के सहाय से प्रस्तुत किया जाएगा।

कुटशब्दः पाणिनीय गणपाठ, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

प्रस्तावना
आचार्य पाणिनि ने व्याकरण की संक्षिप्तता बनाये रखने के लिए गणपाठ का निर्धारण किया। पाणिनीय गणपाठगत शब्दों के अनेक अपभ्रंष रूप प्राकृतादि भाषाओं में तथा प्राकृत, पाली वैयाकरणों द्वारा प्रयुक्त गणपाठों में प्राप्त किये जा सकते हैं। समानता रखने वाली समसामायिक भाषाओं के मध्य ध्वनि परिवर्तन का अवबोध अर्थावगमन में सहायक होता है। आचार्य भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में कहा है कि जब अज्ञानीजन अषुद्ध (अपभ्रंष) रूपों का प्रयोग करते थे तब ज्ञानी लोग ऊहा से शुद्ध (संस्कृत) रूप जान लेते थे। प्राकृत पाली भाषाओं के ग्रन्थों को संस्कृत छाया के साथ पढ़ा जाता रहा हैं बौद्ध, विद्वानों ने पाली के साथ–साथ संस्कृत भाषा में भी धार्मिक पाठों को लिखा है।
पाणिनीय गणपाठ की रचना से अद्यावधि काल पर्यन्त गणपाठगत शब्दों में नये अर्थो का आविर्भाव भी हुआ है। अनेक शब्द ऐसे भी हैं जो अपने मूलार्थ से भिन्न अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। प्राकृत भाषा में ऐसे शब्द भी प्राप्त किये जा सकते हैं जहॉ ध्वनि परिवर्तन के कारण एक ही शब्द अनेक अर्थो के वाचक हो गया है जोकि संस्कृत भाषा में सुदुर्लभ है। ऐसे शब्दों की संस्कृत तथा प्राकृत भाषा में अर्थ की भिन्नता को भी दिखाया गया है। पाणिनीय गणपाठ के अनेक शब्द समानरूप वाले होते हुए भी पाली प्राकृत में विविध अर्थो में प्रयुक्त पाए गए हैं।
भाषावैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत भाषा के पद, ध्वनि, अर्थ तथा वाक्य के स्वरूप में हुए परिवर्तन का अध्ययन किया जा सकता है। प्राकृत, पाली वैयाकरणों द्वारा ध्वनि परिवर्तन का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पाणिनीय गणपाठगत शब्दों में हुए अर्थ परिवर्तन पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है तथा ध्वनि परिवर्तन को यथावसर दिया गया है। अर्थपरिवर्तन के कारणो में परभाषा प्रभाव को तथा ध्वनि परिवर्तन के कारणों में प्रयत्नलाघव को माना गया है। अतः उपरोक्त प्रकार से कुछ शब्दों का विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

वह
'वह प्रापणे' यह प्रापणार्थक धातु प्राप्त होती है। वह शब्द क्रियारूप में ले जाना, धारण करना, आरंभ करना, अर्थो का बोधक है तथा संज्ञारूप वह शब्द पथिक, नाला, विवाह माप–विशेष का वाचक होता है।[1] ''स्कन्धदेषस्त्वस्य वहः''[2] यहाँ वह शब्द बैल के कन्धे के लिए आया है।''धूर्वति हिनस्ति विहन्ति वह अष्वादिकम्[3] यहॉ वह शब्द अष्व का बोधक है।

कुमारपालचरितम्[4] – ''रूट्ठम्मि को व न वहाय'' यहाँ प्राकृत में वध के ध को ह होकर वह रूप है यहाँ वह शब्द वध अर्थ वाला है। ''पत्तो अच्छिवहं खणे तहिं''[5] (अच्छिवहं–अक्षिपथम्) उपर्युक्त स्थल पर वह शब्द पथ का प्रत्यायक है।

रण

रण शब्द युद्ध के लिए प्रसिद्ध है। ''रण्यते ध्वन्यते भटैर्य इति रणः संग्रामः''[6] रण धातु ध्वन्यार्थक है संग्राम में भी ध्वनि होने से रण शब्द से कहा है। ''चक्षु रूपेषु न रणति, श्रोत्रं शब्देषु, यावन् मनो धर्मेषु न रणति''[7] यहाँ रण शब्द संसर्ग अर्थ का द्योतक पढ़ा गया है। अद्वितीयस्य धर्मस्य रणं नास्ति।[7] रण शब्द यहाँ प्रदूषण अर्थ का ज्ञापक है। इसके अतिरिक्त रण शब्द पाप, भ्रष्टता, उत्साह अर्थो में भी आया है।[7]

परिगृहीत

यह शब्द सीमित, नियमित तथा नियन्त्रित अर्थो का वाचक प्राय देखा जाता है। ''अमात्सर्योऽहं कुलपुत्रा अपरिगृहीत चित्तो''[7] परिगृहीत शब्द यहाँ स्वार्थ अर्थ का द्योतक है। असभ्य, कंजूस आदि अर्थो में भी पाली भाषा में मिलता है।[7]

अंशु

अंषु शब्द रेषा, धागा अर्थो में प्रचलित है। यह वस्त्रार्थ में नहीं मिलता। प्राकृत में श को सर्वत्र स हो जाता है। ''काषिकांसु क्षोमकादयः''[7] यहाँ अंसु शब्द वस्त्र अर्थ का बोधक है। अपभ्रंष भाषा में मिलने वाला अंसु शब्द अश्रु के लिए आता हे। ऋग्वेद[8] – ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसतेंऽषुं दुहन्तो अध्यासते गवि'' अंषु शब्द यहॉ सोमरस का प्रत्यायक है। अंषु शब्द सोमलता के डण्ठल तथा वर्गाकार सोमपात्र के लिए भी आया है।[9]

प्रवचन

''वेदस्याध्ययनप्रवचनश्रवणोपदेषः परमो धर्मः[10] यहाँ प्रवचन शब्द शब्दग्रहण मात्र में संकुचित हो गया है। यह अर्थज्ञान पर्यन्त अध्यापन के लिए प्रयुक्त होना चाहिए। प्रवचन शब्द, विविध उपदेष समूहों का अभिधान तथा बौद्धों के धार्मिक पाठों का भी नाम है।[11]

गोत्र

''गोत्रेण पुष्करावर्तं किं त्वया गर्जितैः कृतम्''[12] गोत्र यहाँ उत्पन्न अर्थ का बोधक है। ''सहाऽऽसनं गोत्रभिदाऽध्यवात्सीत्।[13] गां पृथ्वीं त्रायन्ते ते गोत्राः पर्वताः।'' निघण्टु[14] में गोत्र शब्द मेघ के लिए आया है। जगत् में गोत्र शब्द कुल (वंष) का बोधक है। ''गोत्रमिति पूर्वाचार्याणां वृद्धस्य संज्ञा''[15] सम्प्रति गोत्र शब्द का गोत्त शब्द हो गया है जो वंष का ही वाचक है। प्राकृत में गोत्त शब्द गौओं के घेर अथवा बाड़े के लिए आया है।[16] 'गोत्रं द्विविधं प्रकृतिस्थं समुदानीतं च[17] गोत्र यहॉ स्त्रोत (मूल) अर्थ का ज्ञापक है। गोत्र का श्रेणी अर्थ भी विद्यमान है।

गृहपति

गृह नाम घर के साथ–साथ पत्नी का भी है। ''गृहणान्ति गृहा दाराः[18] पति शब्द का स्वामी अर्थ होने पर पत्नी को गृहपति कहा जा सकता है। 'दमूना गृहपतिर्दम आ अग्निभुर्वद्रयिपती रयीणाम्[19] गृहपति यहॉ गृहस्थ के लिए आया है। महाभाष्य[20] – गृहपतिः यजमानः गृहपति अग्निविषेषः अथवा गृहपतिर्नाम मन्त्रः स यस्मिन् उच्यते''। प्राकृत में गृहपति के गाहावई गहवई आदि रूप हो गये हैं। ''गइवई गओम्ह सरणं रक्खसु'' (गृहपते गतोऽस्माकं शरणं रक्षैनमिति)[21] यहाँ पति के लिए गृहपति शब्द प्रयुक्त है। पाली में गृहपति शब्द श्रेष्ठियों के लिए आया है जोकि उनकी समृद्धि का द्योतक होता है।[22] गोत्र के उत्तराधिकारी वृद्ध व्यक्ति के लिए भी गृहपति शब्द आया है। जो पंचायतों में परिवार का प्रतिनिधित्व करता था।[23]

उलूखल

''ऊर्ध्व खं लाति आदत्ते इत्युलूखलम्। उत् ऊर्ध्व स्खलति संचलतीति वा उलूखलम्[24] उलूखल पत्थर का एक पात्र विषेष है जिसका मुख ऊपर की ओर खुला होता है। अमरकोष[25] में उलूखल शब्द गुगल (गुग्गुलू) के नामों में पढ़ा है। प्राकृत भाषा में उलूखल के लिए ओक्खल, उलूहल, उक्खलग, उक्खल, उदूखल शब्द मिलते हैं। सम्प्रति भाषा में उलूखल के लिए सामान्य शब्द उक्खल बहुत प्रचलित है।

जल्प

जल्प नाम वार्तालाप, शास्त्रचर्चा का है जिसमें छल जाति व निग्रह स्थान से काम लिया जाता है।[26] प्रवचन अर्थ भी जल्प शब्द का प्राप्त होता है।[27] ''सर्वां प्रहाय भवलोभजल्पं[28]। यहाँ जल्प शब्द का सर्वथा भिन्न अर्थ इच्छा है। पाली भाषा में जल्प का जप्प रूप हो गया है।

अत्यय

''अत्ययों अतिक्रमणम्[29] अत्यय नाम उल्लंघन अर्थ का कहा है। ''तमसोऽत्यये''[30] यहाँ अत्यय अधिकता अर्थ का बोधक है। अत्ययस्तु स्यान्मरणे दोषदण्डयोः अतिक्रमे च कृच्छ्रे च मृग्यं त्वर्थान्तरं बुधैः[31] उपर्युक्त अर्थ भी अत्यय के कहे गये हैं। ''अत्ययं अत्ययतो आगमा''[32] यहाँ अत्यय शब्द पाप अर्थ में आया है। पाली भाषा में अत्यय का उच्चय रूप प्राप्त होता है तथा प्राकृत में अच्चय रूप मिलता है। प्राकृत में इसके विपरीत आचरण, विनाष, मरण आदि अर्थ प्राप्त हैं।[33]

अणु

''अणति शब्दयति अण्यते जीवनं धारयति येन वा स अणुः अतिसूक्ष्म''[34] समय, देष अथवा किसी भी वस्तु के अतिसूक्ष्म अंषविशेष को अणु से अभिहित किया जा सकता है। ''करेऽणुः शीकरो जज्ञे रेणुस्तेन शमं ययौ''[35] यहाँ अणु शब्द अल्पार्थक है। अणु नाम, पुद्गल के अविभागी अंष का भी है।[36] ''गंगाणुभिः सम्मिताः''[37] यहाँ बालूकण के लिए अणु शब्द प्रयुक्त है। संस्कृत में अणु का यह अर्थ दृष्टिगोचर नही होता।

स्थूल

''न दीर्घौष्ठा नः ह्रस्वौष्ठा नौष्ठस्थूला इह स्त्रियः[38] यहाँ प्रयुक्त स्थूल शब्द गुणमात्र मोटे अर्थ का वाचक है। ''स्थूलः दृढ़ः[39] स्थूल दृढ़ (मजबूत) अर्थ का भी पर्याय है। ''स्थूलं स्थूलं श्वसिति''[40] अर्थात् कठिनाई से श्वास लेता है। स्थूलं कृष प्रत्यनीकं दृढ़ष्च''[41] स्थूल शब्द व्यंजना से कृष अर्थ को भी कहता है। ''तेन बोधिसत्वभूम्यः अस्थानं यदा स्थूलान्हि भूमिहि''[42] यहाँ स्थूल शब्द जीवन की अवस्था विशेष का बोधक है।

कल्प

''कल्पत इति कल्प समर्थः[43] कल्प शब्द का समर्थ अर्थ होने से कल्पदुम (इच्छापूर्ति में समर्थ) अर्थ भी है। कुमारपालचरितम्[44] अमिलाण पारिजायापव्वाइअ–कप्प– कुसुमग्घो'' प्राकृत में कल्प का कप्प रूप मिलता है। कल्प क्रिया रूप में करना, बनाना, वर्णन, क ल्पना अर्थो का बोधक है।[45] चित्तं नभस्कल्पमिदं महिम्ना युद्धे–यषस्काम्यति केनचित्ते''[46] कल्प शब्द यहाँ सदृषार्थक है। कल्प समय का परिमाण विशेष भी है। कल्प नाम साधुचर्या की शास्त्रोक्त विधि का भी है।[47] पाली भाषा में कल्प शब्द प्रकार, सादृष्यता (रूप की) तथा उदासीन अर्थो में भी मिलता है।

सम्पराय

''सम्परायस्तु सङ्ग्रामे विपदुत्तरकालयोः[48] सम्पराय नाम युद्ध, विपत्ति का है। सम्पराय शब्द परिभ्रमण स्थान, दुर्भाग्य, पराजय आदि अर्थो का भी ज्ञापक है।[49] ''गमनीयो सम्परायो''[50] यहाँ

भविष्यकालीन स्थिति का द्योतक है यह अवस्था मृत्यु के बाद की भी हो सकती है। ''सम्परायसुखाय''[50] पारलौकिक सुख के लिए। सम्पराय नाम कर्मो के द्वारा आत्मा के पराभव तथा चतुर्गति स्वरूप संसार का भी है।[51]

उपसर्ग

उपसर्ग नाम विपत्ति (संकट) का है।[52] प्राकृत में उपसर्ग का उवसग्ग रूप हो गया है परन्तु अर्थ बाधा ही प्राप्त होता है। अपभ्रंष भाषा में भी उपसर्ग का उवसग्ग रूप ही मिलता है। ''उवसग्ग वि हवेतु णासिज्जइ''[53] (विघ्न उपस्थित होने पर नाष निष्चित है)। आपस्तम्ब श्रौ.सू.[54] – उपसर्ग नाम सोम के डण्ठलों पर निग्राभ्य संज्ञक जल उड़ेलने का भी है।

आरम्भण

वष में करना, पकड़ना अथवा पकड़ने के स्थान का नाम आरम्भण है।[55] आधार, प्राधिकरण भी आरम्भण के अर्थ हैं – ''विविधः आरम्भणैः'' ''यस्मिन् यस्मिन् आरम्भणे।[56] यहाँ आरम्भण शब्द स्थान का वाचक है। इसके अतिरिक्त बिन्दु, कारण अर्थ भी यहाँ आरम्भण शब्द के मिलते हैं।

विषारद

''विषारदः प्रवीणः[57] यहाँ प्रवीण अर्थ लक्षणा से जानना चाहिए। किसी कार्य में निरत पुरातन व्यक्ति उस कार्य में प्रवीण हो जाता है। उसी को विषारद शब्द से जानना चाहिए। पाली भाषा में विषारद शब्द संदेहरहित. तथा विकसित अर्थ में भी मिलता है। पाली में विषारद नाम भयरहित तथा आत्मविष्वास का नाम भी है। विषारद शब्द के उपरोक्त अर्थ संस्कृत में उपलब्ध नहीं होते हैं।

उत्कण्ठा

उत्क शब्द भी उत्कण्ठा अर्थ में मिलता है। अनेक वैयाकरणों द्वारा उत्कण्ठा शब्द के स्थान पर उत्कण्ठ शब्द ही पढ़ा गया है। इन तीनों शब्दों में अर्थ की अभिन्नता रही होगी। ''उन्नतः कण्ठो यस्य[59] चिंता, खेद, दुख, व्याकुलतादि इसके अर्थ कहे गये हैं। अर्जुनरावणीयम्[60] ''द्रुद्रावयिषुरात्मस्थामुत्कण्ठां कष्चिदागतः'' (आत्मस्थां उत्कण्ठां गुरोरेव पुरः सन्निधौ) प्राकृत में उत्कंठा शब्द का रूप उक्कंठा, उक्कण्ठा मिलता है। प्राकृत में उक्कंठा का अर्थ मानसिक दुख ही है। सम्प्रति उत्कण्ठा शब्द लालसा, इच्छा अर्थ में भी देखा गया है।

व्रण

दाग, चिह्न, घाव, फोड़ा ये अर्थः व्रण के मिलते हैं।[61] ''आत्मानं सव्रणं ज्ञात्वा''[62] यहाँ व्रण शब्द दोष अर्थ का प्रत्यायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत प्राकृत–हिन्दी–अंग्रेजी कोष (डॉ0 उदयचन्द्र जैन)
2. अमरकोष (02/09/1963)
3. निरूक्त (पृ0184)
4. कुमारपालचरितम् (5.59)
5. कुमारपालचरितम् (4.78)
6. गणरत्नावली (6.1.160)
7. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
8. ऋग्वेद (10.94.9)
9. वैदिक यज्ञों का सचित्र कोष
10. वैदिक व्याकरण (पृ02)
11. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
12. द्वयाश्रयमहाकाव्य (3/16)
13. भट्टिकाव्य (1/3)
14. निघण्टु (1/10)
15. जैनेन्द्रव्याकरण (पृ064)
16. संस्कृत प्राकृत हिन्दी अंग्रेजी कोष (डॉ0 उदयचन्द्र जैन)
17. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
18. व्याकरणचन्द्रोदय, भाग–2, पृ035
19. ऋग्वेद (1.60.4)
20. महाकाव्य (भाग–4) (पृ0 237–238)
21. गाहासत्तसई (3/97)
22. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
23. हेमषब्दानुषासन (6.1.3)
24. गणरत्नावली (6.3.109)
25. अमरकोष (2/14/34)
26. प्राकृत हिन्दी कोष (पाइअसद्दमहण्णवो)
27. The Dictionary of Panini Ganapatha
28. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
29. प्रयोगदीपिकावृत्ति
30. बृहद्देवता(2.65)
31. नानार्थार्णवसंक्षेप न्यक्षर (न्यक्षर0 पुल्लिंग 2–3)
32. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
33. प्रा0हि0को0 (प्राकृतषब्दहमार्गवः)
34. उणादिप्रयोगदीपिकावृत्ति
35. षिषुपालवधम् (19/37)
36. संस्कृत–प्राकृत–हिन्दी–अंग्रेजी कोष (डॉ0 उदयचन्द्रजैन)
37. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
38. द्वयाश्रयमहाकाव्य (1/19)
39. गणरत्नमहोदधि
40. आप्टे कोष
41. गणरत्नावली (पृ0 69)
42. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
43. गणरत्नावली (6.1.203)
44. कुमारपालचरितम् (6/12)
45. प्रा0हि0को0 (प्राकृतषब्द महार्णवः)
46. अर्जुनरावणीयम् (26/8)
47. जैन पारिभाषिक कोष
48. नानार्थार्णवसंक्षेप (चतुरक्षरकाः, पुल्लिंग 119)
49. संस्कृत प्राकृत हिन्दी कोष डॉ0 उदयचन्द्र जैन)
50. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
51. जैन पारिभाषिक कोष
52. प्रयोगदीपिकावृत्ति
53. अपभ्रंष – हिन्दी कोष (डॉ0 नरेष कुमार)
54. आपस्तम्ब श्रौत सूत्र (12.10.10)
55. आप्टे कोष
56. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
57. गणरत्नमहोदधि
58. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)
59. संस्कृत प्राकृत हिन्दी–अंग्रेजी कोष (डॉ0 उदयचन्द्र जैन)
60. अर्जुनरावणीयम् (24/57)
61. संस्कृत प्राकृत हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोष (डॉ0 उदयचन्द्र जैन)
62. Buddhist Hybrid Dictionary (Franklin Edgerton)